Increase/Decrease	
Over B.E.	Over R.E.
(−) 2025	(−)1525
(−) 4550	(−) 1550
(−) 6575	(−) 3075

(c) The main reasons for shortfall in collection during the financial year 1997-98, are as under:—

(i) There has been a general recession in the Industry during F.Y. 1997-98. Manufacturing sector has specially suffered a set back affecting the collection of taxes.

(ii) General Election during the year.

(iii) Lower rates of taxes may also be a factor to some extent for shortfall.

(iv) VDIS collections during financial year 1997-98 are Rs. 9474.13 Crores. Taking this also into account, Budget Estimates are even exceeded. VDIS collections have affected the liquidity in the market having adverse implications on regular collections.

(v) The targets for collections for the financial year 1998-99 have been fixed for each Chief Commissioner Region. The CCsIT have been requested to personally monitor the top hundred cases of corporate and non-corporate assessees in his reason. The dossier reports of top hundred defaulters will also be undertaken at the level of each CCIT so that the efforts for cash collections are sustained on a continuous basis. The Board will also be monitoring the collection on top priority basis.

Issue of Cheque Book Without Requisition Slip

660. SHRI O.P. KOHLI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether the Bank of India, Parliament Street, New Delhi had issued a cheque book without the requisition slip;

(b) whether cheques were passed for payment by the branch officials which were bearing forged signatures on the cheques;

(c) if so, has the matter been investigated and if so, what action has been taken against the branch officials for issuing cheque books without requisition slip and authorising the payment on fake signature; and

(d) whether the cases of this type are on the increase and taking place in many public and private sector banks without in action being taken against the officials?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI R. JANARTHANAM): (a) Against the requisition slip sent by St. John Ambulance Brigade for issue of a cheque book containing 25 leaves, the Bank of India, Parliament Street Branch issued two cheque books containing 10 leaves each and handed them over to the authorised representative whose signature was attested by the competent authority. This was done as cheque books with 25 leaves were out of stock at that time. However, the authorised collector reportedly gave only one cheque book to the account holder.

(b) According to Bank of India the cheques were passed for payment by the branch officials since the signature appearing on the cheques apparently tallied with the specimen signature on branch record. The customer was getting statement of account on regular basis. Yet no complaint about the alleged forgery was filed till 31.5.97 whereas 9 withdrawals amounting to Rs. 2.85 lakhs were made from the S/B Account during the period

from 28.1.1995 to 20.11.1996, using cheque leaves from the cheque book which was not handed over to the account holder.

(c) The matter has been investigated by the Zonal Office, Bank of India as well as by the Police. The employees of the St. John Ambulance Brigade who had collected the cheque books and withdrawn money by forging signature has been dismissed from the services by his employer. The question of staff accountability will arise in the event of the result of police investigation pointing in that direction.

(d) As and when a fraud comes to the notice in public sector banks, the matter is investigated by the concerned authorities and at the time of investigation staff accountability is also looked into.

बैंक-ऋणों के चूककर्ता

661. **श्री बरजिन्दर सिंह:**
श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया:

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि अखिल भारतीय बैंक कर्मचारी संघ द्वारा यह मांग की गई है कि बैंकों से 10 लाख रुपये से अधिक का ऋण लेने वाले ऋणी व्यक्तियों के नाम घोषित किए जाएं जो निर्धारित समय के भीतर ऋण चुकाने में विफल रहे हैं;

(ख) क्या यह भी सच है कि निर्धारित समय के भीतर ऋण वापस न कर पाने वाले ऋणी व्यक्तियों के ऊपर 42,000 करोड़ रुपये की राशि बकाया है;

(ग) यदि नहीं, तो इस संबंध में अनुमानतः ऐसी कितनी बकाया राशि है; और

(घ) सरकार ऐसे चूककर्ताओं के नामों की सूची कब तक प्रकाशित कर देगी?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आर० जनार्दनम): (क) अखिल भारतीय बैंक कर्मचारी संघ के महासचिव ने दिनांक 19 दिसम्बर, 1996 को तत्कालीन वित्त मंत्री को एक पत्र लिखा था जिसमें बैंकिंग उद्योग से संबंधित विभिन्न मुद्दे उठाए गए थे जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ 10 लाख रुपए से अधिक के सभी बैंक चूककर्ताओं की सूची का पूर्ण रूप से प्रकटन शामिल था।

(ख) और (ग) भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, उनके पास अद्यतन उपलब्ध सूचना के आधार पर दिनांक 31.3.1997 की स्थिति के अनुसार सरकारी क्षेत्र के बैंकों की 43577.89 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोज्य आस्थियों (एन०पी०ए०) के रूप में बकाया है।

(घ) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 के अध्याय III-क में निहित उपबंधों के अनुसार व्यक्तिगत उधारकर्ताओं के ब्यौरे प्रकट करना मना है। जब किसी उधारकर्ता के विरुद्ध मुकदमा दायर किया जाता है, ये ब्यौरे प्रकट किए जा सकते हैं। इसलिए भारतीय रिजर्व बैंक प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को उन उधार खातों की सूची प्रकाशित करता है जिनकी कुल राशि एक करोड़ रुपए और उससे अधिक है तथा जिनके विरुद्ध बैंक और वित्तीय संस्थाओं ने अपनी प्राप्त राशियों की वसूली के लिए वाद दायर किए हैं।

भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन

662. **श्री बरजिन्दर सिंह:**
श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया:

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि वित्तीय वर्ष 1997-98 के दौरान अमरीकी डॉलर की तुलना में भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन हुआ था;

(ख) यदि हां, तो कुल अवमूल्यन का प्रतिशत क्या था; और

(ग) वर्ष 1997-98 के दौरान अवमूल्यन के कारण देश को विदेशी ऋण के भुगतान के संबंध में ब्याज और ऋण की किस्त के रूप में कितनी अतिरिक्त राशि का भुगतान करना पड़ा और मार्च, 1997 और मार्च, 1998 के अन्त में विदेशी ऋण की राशि कितनी-कितनी थी?

वित्त मंत्री (श्री यशवंत सिन्हा): (क) और (ख) भारत में रुपए की विनिमय दर बाजार निर्धारित होती है। इस प्रणाली के अन्तर्गत, रुपए की विनिमय दर दैनिक आधार पर दोनों दिशाओं में परिवर्तित होती रहती है। 1997-98 के दौरान, अमरीकी डालर की तुलना में रुपए की विनिमय दर में 1996-97 के औसत मूल्य की तुलना में 4.48 प्रतिशत का अवमूल्यन हुआ।

(ग) विदेशी ऋण पर ऋण सेवा अदायगियां (ऋण की वापसी अदायगियां और ब्याज अदायगियां) साधारणतया उस मुद्रा में की जाती हैं जिसमें ऋण मूल्यवर्गित होता है। इस प्रकार रुपए की विनिमय दर में उतार-चढ़ाव संबंधित मुद्राओं में देश की विदेशी ऋण